मैथिली लोकोक्ति

पाठ्यक्रम संख्या-12

Page No.:
Date: 20/4/2020

मैथिली अनिवार्य विषय (50 अंक) Part-II
(Sc., Arts. & Com.) Unit-5

DR. ARVIND JHA
Asstt. Prof
Dept. of Maithili
Marwari College
Darbhanga
M-9040201409

लोकोक्ति

1. गुरुक गुड़ चेला चिन्नी (गुरुसँ अधिक चेला सँ श्रेष्ठ होयब) — राम बड़ कंजूस छथि हुनका। हुनक धियापुता हुनको सँ बेसी कंजूस अछि। परिहास कएल गेलैक अछि गुरुक गुड़ चेला चिन्नी।

2. गोरि नाउनि गौरवे आन्हरि (कने सने भला नेना पर बेसि गौरव करब) — ओ छौड़ीक रूप सुन्दर छैक ओ रूप गौरवसँ आन्हर रहैत अछि लोग गरबे अपन रूपक प्रशंसा करैत रहैत अछि। परिहास कएल गेलैक अछि गोरि नाउनि गौरवे आन्हर रहैत अछि।

3. घरक भेदिया लंकादाह (घरक चालसँ सार्वजनिक कल्याणकेँ हानि होइत छैक) एकटा नोकर अपन मालिकक घर सभ भेद सभ के काढ़ि देलकैक तकर बाद मालिक घर मे चोरि भए गेलैक। पुलिस द्वारा ध्यान देला पर पता लागल जे घर भेदिये लंकादाह कएलक।

५. चलए नहि आबए त अंगने टेढ़ (अपन दोष दोसराक पर अनका दोषी ठहराएब) - जखन हिसाब करए लगलाह तऽ हिसाब नहि मिलनाहि पर ओ कहलनि हिसाबे नहि मिलैत अछि लगैत अछि केओ अपन हिसाब ठीक सँ नहि देलक। ताहि पर मालिक कहलखिन ठीक कहबी छैक चलए नहि आबए त अंगना टेढ़।

६. चोर कनइ इनोत सहए (चोर अपन निशान वा चिन्ह कोनो काज कऽ दोसर अछि जाहि सँ ओकर चोरि पकड़ा जाइत छैक) - गामक पंचमे मे सब गौआँ के बजाओल गेल, सब आयल जखन जे चोरि करने छल से नहि आयल। ताहि पर पंच कहलनि चोर कनइ इनोत अछि।

७. गरदन नहि धाकड़ जनए (कुंरवक नरे कुंरब नोगीनदार छुट्टैत अछि। बेटीक विवाहमे ममरक रवन्य नऽ गेलाह जे व्योहल नए गेलाह। सब पुछैत कने कऽ रवन्य भेल ताहि पर ओ कहलाह गरदैक नहि धाकड़ जनल अछि।

७. गाय बिकाएल चूर बहिए मे (लाभक स्थान मे हानि होएब) - रंजा रिकरा दोनान रखेलनि जखन ओ नहि चललनि बेचक जवांसि नाकरक दुरनाहा देखए पड़लनि। सबकहि कहल गेलैक अछि गाय बिकाएल चरवाहिए मे।

(8) हड़बड़ी बिआह कनपट्टी सिन्दूर (अनुभवहीन कोनो काज नहि होइछ) - परीक्षाक राति मात्र पढ़ला सँ किछु नहि होइत जेना हड़बड़ी बिआह कनपट्टी सिन्दूर अर्थात स्थिर सँ पूरा समय दऽ क कोनो काज करबाक चाही।

Page No.:
Date: / /

9. सापो मरए आ लाठियो नहि टूटए (बिना आर्थिक क्षति काज सिद्ध होएब) — नोकर के वेतन न दौज पड़ हुअनि जे आ नोकर छोड़ि के भागि गेल जाहि स नोकरी के हटेबाक काज सिद्ध भेल। मालिक बजलाह यहू सापो मरि गेल आ लाठियो नहि टूटल।

10. मानू त देवता नहि त पाथर (विश्वास स फल भेटब इत्यादि) ईश्वर के लोक देखने नहि अछि, फोटो वा पाथरक मूर्ति के पूजा करैत अछि। जे नहि मानैत अछि ओ कागज वा पाथर बुझैत अछि। त कहल गेलैक अछि मानू त देवता नहि त पाथर।

11. बिआहसँ बिधि भारी (तत्व के छोड़ि आडम्बर के महत्व देब) — कोनो विवाह वा उपनयन मात्र किछु घण्टा मे सम्पन्न होइत अछि मुदा सामाजिक वा पारिवारिक विधि-विधान आनो दिन धरि चलैत रहैत अछि तें कहल गेलैक अछि बिआहसँ बिधि भारी।

12. बानर की जानए आदक स्वाद (अज्ञानी कला ज्ञानक मर्म बुझय) — अस्वस्थ भेला पर डाक्टर जे कहए से करी। ओकर ज्ञान ओहि बुझैनक आदत जे काज नहि आबए से नहि करी नहि तऽ लोक कहत बानर की जानए आदक स्वाद।

13. बाड़िक पटुआ तीत (सुलभ भेटल वस्तुक महत्व नहि देब) — अपन बाड़ीक तरकारी नीक नहि लगैत अछि आ बाजारसँ महग तरकारी स्वाद मे नीक लगैत अछि तें कहल गेलैक अछि बाड़िक पटुआ तीत।

Scanned with CamScanner

Page No.:
Date: / /

14. ने रहत बाँस न बाजत बँसुरी (कोनो घटनाक कारणे के समाप्त करब) — दूनू भाइक बँटवारा हेतु झगड़ा करैत देखि बाप समस्त जमीन अनाथालय के दए देलनि से कहल गेल अछि जे रहत बाँस न बाजत बँसुरी।

15. दुनू हाथ लड्डू (दुनू दिशा सँ लाभ) नीक पढ़लासँ नम्बरो नीक नोकरी भेट जाइत अछि मेहनत कए अपन स्वरोजगार नीक सँ कए सकैत छी ते पढ़ला सँ दुनू हाथ लड्डू अछि।

16. दूरक ढोल सोहाओन (जाहि विषय के नीक सँ नहि बुझल अछि ओ नीक लगैत छैक) दिल्लीक नाम सुनिते लोक हड़बड़ जाइत अछि आ ओतए गेलाक बाद पहुँचला सँ पता चलैत अछि जे कहल गेल अछि दूरक ढोल सोहाओन।

17. ठेस लगने बुद्धि बढ़य (कोनो काज मे असफलता सँ ज्ञान वृद्धि होइत छैक) प्रतियोगिता परीक्षा मे पहिल बेर सफल नहि भेलाह तs अपन कमजोरी के बुझलनि आ दोसर बेर नीक ढंग सँ सफल भेलाह। से कहल गेल अछि ठेस लगने बुद्धि बढ़ैत छैक।

—— x ——

डॉ० अरविन्द झा
मो०- 9040201409